Page :
Date :

लिंग असमानता की चुनौतियों में विद्यालयों की भूमिका —

शिक्षा आयोग (1964-66) ने भी बालिकाओं की शिक्षा पर बल देते हुए कहा है कि हमारे मानवीय साधनों के पूर्ण विकास, घरों के सुधार और शैशव के सर्वाधिक संस्कारग्राही वर्षों में बच्चों के चरित्र के निर्माण हेतु स्त्रियों की शिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। महिला शिक्षा प्रजनन दर घटाने में भी सहायक हो सकती है। स्वतन्त्रता मिलने के बाद किये गये प्रयासों के बावजूद शिक्षा प्रणाली महिलाओं की समानता के प्रति पर्याप्त योगदान नहीं कर सकी। सन 1991 की जनगणना के अनुसार, महिला साक्षरता दर 39.29% है जबकि पुरुष साक्षरता दर 64.13% है। 19.7 करोड़ महिलाएँ निरक्षर हैं, जबकि निरक्षर पुरुषों की संख्या 12.7 करोड़ है। ऐसे देश में जहाँ पुरुषों की संख्या महिलाओं से 3.2 करोड़ अधिक है पुरुषों की संख्या से 7 करोड़ महिलाएँ अधिक निरक्षर है।

बालिकाओं को महँगी व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने में आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। क्योंकि उनके अभिभावक उनकी शिक्षा पर धन व्यय करना धन की बरबादी समझते है। अतः बालिकाओ का व्यावसायिक क्षेत्र में तभी नामांकन बढ़ सकता है जब उनके लिए यह शिक्षा निः शुल्क हो जाए।

लिंग असमानता की चुनौतियों में शिक्षक की भूमिका —

लिंग असमानता की चुनौतियों में शिक्षक की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक समाज का एक अभिन्न अंग होते है लेकिन कभी - कभी शिक्षक लिंग असमानता को भी बढ़ावा देने का कार्य करते है। उनमे लिंग के आधार पर समाज के अन्य तबको की ही भाँति रूढ़िवादिता तथा पूर्वाग्रह उत्पन्न हो जाते है। इन पूर्वाग्रहो से अभिप्रेरित होकर शिक्षक लिंग असमानता को बढ़ाने में अपनी भूमिका निभाने लगता है।

Date :

शिक्षक को सदैव कक्षा में लिंग समानता का व्यवहार करना चाहिए। शिक्षक का अपने छात्र एवं छात्राओं से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। छात्र भी अपनी विभिन्न समस्याओं के समाधान में शिक्षक की सलाह को विशेष महत्व देते हैं। अतः शिक्षकों को इस बात के लिए प्रशिक्षण देना आवश्यक है कि वह अपने व्यक्ति के द्वारा छात्रों को प्रभावित करे और उनसे अन्तः क्रिया बढ़ाएँ।

शिक्षक को भी लिंग पूर्वाग्रहों से बाहर निकलकर लिंग समानता-पूर्ण व्यवहार करने का प्रयास करना चाहिए। उसे प्रतिभा के आधार पर छात्रों का चुनाव करना चाहिए। उसे प्रतिभा के आधार पर छात्रों का चुनाव करना चाहिए तथा विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्रों की योग्यता एवं प्रतिभा को महत्व देना चाहिए। अधिकांशतः यह देखा गया है कि कुछ शिक्षक छात्रों को अधिक महत्व देते हैं और छात्राओं को कम। कभी इसके

विपरीत स्थिति भी आ जाती है, शिक्षक छात्राओं को अधिक महत्व देते हैं और छात्रों को कम। इन सभी स्थितियों में शिक्षक का व्यवहार भेदभावपूर्ण हो जाता है तथा न्याय एवं समानता पर आधारित नहीं रहता है। छात्रों को हमेशा छात्र एवं छात्राओं की प्रतिभा तथा योग्यता को महत्व को महत्व देना चाहिए न कि उनके को। शिक्षक की दृष्टि में सभी छात्र एकसमान होने चाहिए और उन्हें सभी के साथ समानता का व्यवहार करना चाहिए। शिक्षक को सदैव गुरु की मर्यादा में रहना चाहिए और छात्रों को, चाहे वे किसी भी लिंग के हो अपने बच्चों की भाँति उनसे व्यवहार करना चाहिए जिसमें पक्षपात की कतई गुंजाइश न हो।